चुटकुला गोष्ठी

Surendramohan Gupta
I B. Com.

जज : "यह तो तुम मानती हो कि तुमने अपने पति को कुरसी उठाकर मारा था। बताओ ऐसा किसलिए किया"?

औरत : (साँस लेकर) "इसलिए कि मेज़ न उठा सकी"।

* * * * *

न्याधीश ने जेबकतेर को सजा सुनाते हुए पूछा—"अच्छा, यह बताओ तुमने समाज का क्या क्या भला किया"?

अपराधी—"मिलाई! हम लोगों के कारण ही पुलिस—विभाग में हज़ारों आदमियों को नौकरी मिली हुई है।"

* * * * *

गुप्ता हरीष से जो अपने कुत्ते को साथ लेकर आ रहा है—"क्यों भई, तेरे साथवाले गधे का क्या हाल है"?

हरीष—"क्यों रे, नज़र नहीं आता जो मेरे कुत्ते को गधा बता रहे हो"?

गुप्ता : "नहीं दोस्त, तुम्हें गलतफहमी हो गयी है। मैं कुत्ते से पूछ रहा था"।

* * * * *

एक चोर : "मगर भाई आओ गिन तो लें कितना धन मिला है"?

दूसरा चोर : "अब रहने दे यार, मैं तो थक गया हूँ। कल सुबह अखबार से सब मालूम हो जाएगा"।

* * * * *

एक नवविवाहिता औरत का पति बाहर था। महीने बाद उसने 500 रू० का चेक पत्नी को भेजा। पत्नी चेक लेकर बैंक पहुँची। बैंक में क्लार्क ने चेक देखकर कहा—"यह चेक आपको किसने भेजा है"?

"मेरे पति ने"—शरमाते हुए युवती ने कहा

"ठीक है, आप इसके पीछे एन्डोर्स कर दीजिए"।

"एन्डोर्स? मैं समझी नहीं"

"मेरा मतलब है, जैसे कि पत्र की समाप्ति पर आप अपने पति को लिखती हैं"—क्लार्क ने समझाया

एक मिनिट बाद जब युवती ने चेक क्लार्क को दिया तो वह देखकर अवाक रह गया। चेक के पीछे लिखा था—

"एक हज़ार मधुर चुम्बनों के साथ तुम्हारी सरोज"।

" कौन है ? "

" शेरसिंह "

" पिता का नाम ? "

" शमशेरसिंह । "

" कहाँ रहते हो ? "

" शेरों वाले मुहल्ले । "

यहाँ क्यों खडे हो ?

" कैसे जाऊँ, आगे कुत्ता भौंक रहा है । "

* * * * *

पिता ऊपर के कमरे से—" अरे डब्बू, यह रेडियो बन्द कर दो ! कितनी भद्दी आवाज़ है, जैसे कोई गधा गा रहा हो " ।

डब्बू—" पिताजी यह रेडियो नहीं चल रहा है, मम्मी जी गाना गा रही है । "

* * * * *

छत पर कुछ शोर सुनकर मेहमान ने मेजबान के बच्चे से पूछा—" यह ऊपर क्या हो रहा है ? "

बच्चा—" शायद मम्मी पापा की पतलून छिटक रही है । "

मेहमान—" लेकिन उससे तो इतना शोर नहीं होता । "

बच्चा—"शायद उस पतलून में पापा भी होंगे ।

* * * * *

पिता—"बेटे, हमेशा दूसरों की मदद किया करो ; हम इसलिए दुनिया में आये हैं कि दूसरों की मदद करें । "

बेटा—" तो फिर पिताजी, दूसरे लोग किसलिए आये हैं ।

* * * * *

पापा—" तुम रो क्यों रहे हो रामू ? "

रामू—" पापा, आज मास्टरजी ने मुझे बहुत मारा । "

पापा—" क्यों ? "

रामू—इसलिए कि मेरे सिवा उनके प्रश्न का उत्तर कोई भी लडका नहीं दे सका ।

पापा—" फिरभी मारा ? यह तो बताओ उन्होंने क्या प्रश्न किया था ? "

रामू—उन्होंने पूछा था कि ब्लैक बोर्ड पर उनका चित्र बनाकर नीचे गधा किसने लिखा है ?

समय का सदुपयोग

JITHESH S. SHAH

I B. Com.

हम भारतीय समय का सही मूल्य नहीं समझते। समय सचमुच बहुमूल्य है। जैसे धन का मूल्य न समझने वाला व्यक्ति धन का अपव्यय करके शीघ्र ही निर्धन व दुखी हो जाता है और जीवन भर पश्चात्ताप किया करता है ठीक वैसे ही समय का महत्व न जानने वाला भी असफल ही रह जाता है।

समय का ठीक और उचित प्रयोग तथा नियम–बद्ध जीवन मनुष्य को स्वस्थ और सुखी बनाता है। जो व्यक्ति अपने समय का एक निश्चित कार्यक्रम के अनुसार उपयोग करता है वह जीवन के सभी क्षेत्रों में सफल बन जाता है।

एक बच्चा यदि शुरू से ही ठीक समय पर उठता है, प्रभात कर्म, भोजन, व्यायाम आदि निश्चित समय पर करना सीख लेता है तो बहुत ही अच्छा है। क्योंकि बडा होते होते वह स्वाभाविक रूप से समय का पाबंद बन जाता है और भविष्य में एक योग्य नागरिक बन जाता है।

इसी प्रकार एक व्यापारी के जीवन को देखें। जो व्यापारी ठीक समय पर अपने काम निपटा कर अपनी दूकान पर पहूँचता है, अपने ग्राहकों को समय पर माल पहूँचा देता है उसपर सब विश्वास करने लगते हैं। उसका व्यापार खूब फलता फूलता है।

यही बात अधिकारी के जीवन की भी है। नेता हो या अभिनेता, अधिकारी हो या न्यायाधीश, प्रिन्सिपल हो या प्रेफेसर जो समय का सम्मान नहीं करता उन का कभी मान नहीं होता। धीरे धीरे सब कुछ बिगडने लगेगा।

हम भारतवासियों का एक बडा शाप है कि हम समय का सदुपयोग नहीं करते। इस देश में कोई भी समय पर अपना काम नहीं करता। इतना भी नहीं, समय पर काम न करना एक बडा महत्वपूर्ण कार्य समझने वाले भी इस देश में हैं।

प्रत्येक व्यक्ति के दैनिक जीवन में समय का कितना महत्व होता है, सोचना चाहिए। आप थोडा विलम्ब कीजिए, गाडी चल पडती है, आप मुँह देखते रह जाते हैं। अगर किसी के पास जाना है, देर करने से आप उससे मिल नहीं सकेंगे। इस प्रकार समय की सम्मान न करने से कभी कभी मनुष्य को जिन्दगी भर रोना भी पडता है।

तालाब का चाँद

RAJAN P. C.

I B. Sc., Physics

निशा में आकाश से
मन्द मन्द आता है
अपने मनोहर रूप को
औरों को समर्पित करने ।

पड़ती सब की आँखें उस पर
उस मधुर सौंदर्य में डूब कर
सब कुछ भूल जाते हैं
"प्यारा चाँद, मेरा चाँद ।

देख कर कह उठता तालाब,
स्वार्थवश सब आते हैं पास,
प्यास बुझाकर जाते हैं सब
मेरा अपना कोई नहीं ।

चाँद तालाब को छाती से लगा लेता है
उस में थिरक कर देता है" ।
युगों युगों से चलता है यह
अमर प्रेम का मूक संगीत ।

तू ही मेरी ज़िन्दगी

ABDUL MAJEED C. N.

I B. Com.

वह नाम मेरे दिल की धड़कन है। उसकी याद मेरे दिल का उजाला है। ओह ! मैं उसे कभी नहीं भूल सकता। लाख कोशिश करने पर भी। मेरा दिल, उस पर मेरा कोई नियन्त्रण नहीं है। लोग कहते हैं कि मैं आवारा हूँ, पागल हूँ। मैं क्या करूँ। माँ–बाप भी मुझे नफरत की आँखों से देखते हैं। कोई भी मुझे और मेरे बीमार दिल को समझने की कोशिश नहीं करता।

बचपन में पिताजी सिर पर हाथ फेर कर बोला करते थे–"बेटे, तू अच्छी तरह पढ, बुरे रास्ते से मत चल। हम बहुत गरीब हैं। तुझे ठीक तरह से पढाने की शक्ति हमें नहीं है। फिरभी तकलीफें झेलकर हम तुझे पढा रहे हैं। विपत्तियों में हमारी सहायता करने के लिए इन दुनिया में कोई नहीं है। सुख में साथ हँसने के लिए लोग होंगे। लेकिन दुख में साथ रोने के लिए कोई नहीं होगा। पिताजी के उन शब्दों का अर्थ आज मैं अच्छी तरह समझ गया। आज मेरी आँखों से बहनेवाले आँसू और हृदय की गहराई से निकलनेवाली आँटें किसी के मन को प्रभावित नहीं करती।

मुहब्बत ने मेरा सब छीन लिया है। माँ–बाप, मित्र, रिशतेदार, पढाई, मेरा मन सब कुछ। आज मैं एक लाश हूँ। जीनेवाली लाश। अभीलाषाओं के मसान से होकर इन जीवन के अन्त तक चलना है। मेरे इस बीमार मन को कब शान्ति मिलेगी ? यह गाना, रेडियो में यह गाना—

"मुझे लौटा दे मेरे
बीते हुए दिन"—

जब सुनता हूँ तो मेरा कलेजा फट जाता है। बीते हुए दिन अब मिलने वाले नहीं हैं। सदा के लिए मुझे बरबाद कर वे बीत गये। वह लडकी ! उसकी याद वर्षों बाद आज भी मेरे दिल की धडकन बढा देती है।

वह खूबसूरत थी। हमेशा पिंक साडी पहनेनवाली दुबली पतली वह मेरे लिए कविता सी प्यारी थी। जब मैंने उसे पहली बार देखा तब हृदय के किसी अनजाने कोने में एक कंपन सा अनुभव किया। उससे बोलना चाहा। लेकिन मेरी भाषा मूक हो गयी। दिन कई बीत गये। उससे बातें करने की मेरी इच्छा सफल नहीं हुई। उसे भूलना चाहा। लेकिन वह बडे अधिकार के साथ मेरी आत्मा में एक स्थिर स्थान पा गयी। निद्रा में और जगरण में उसकी याद मेरे साथ रही। उस स्मरण की स्वर्गीय अनुभूति में मैं सब कुछ भूल गया। अपने घर–बार, पढाई, माँ–बाप सब को भूल गया।

धीरे धीरे उस लडकी के बारे में मैं सब जान गया। मैं ने एक प्रेम पत्र लिखा। लेकिन उसे नहीं दिया। देने का विचार भी मुझे नहीं था। जो मन में था, वह सब लिख डाला, बस। एक बार मैं ने उस से बोलने शक्ति प्राप्त की। वह जा रही थी। मैं ने उसे धीरे से नाम लेकर पुकारा। मेरी आवाज़ में एक विचित्र कंपन था। जैसे कि आवाज़ के साथ एक वीणा की मधुर झंकार भी मिली हुई हो। उसने मुड कर देखा। आँखों परस्पर मिलीं। हृदय की भाषा हृदय जान गया। वह जल्दी शरमा गयी। मुझे धीरज मिल गया। बोला—"देखो, मैं तुम्हें बहुत चाहता हूँ"।

उसका चेहरा लाल हो गया। शरम के मारे वह कुछ बोल नहीं सकी। एक बार मेरे चेहरे को देखने का विफल प्रयत्न किया। फिर जल्दी से चली गयी।

तब से मैं बिलकुल एक नया आदमी बन गया। वसन्त ऋतु का जीवन में नवारंभ। हम फिर भी मिले। हर बार वह चेहरा नीचा कर हँसते हुए चली जाती थी। एक दिन उसने चेहरा उठाकर मुझे

देखा। उसकी बडी बडी आँखों में चमक थी। वह बोली—"मैं भी तुम्हें बहुत चाहती हूँ"

मैं ने कहा—"मुझे मालूम था"।

"कैसे"?

"प्रेम छिपाने से नहीं छिपता"

वह शरमा गयी। एक बार मुझे बडे प्यार से देखकर चली गयी।

हमारा प्रेम दिन व दिन पलने लगा। हमें लगा कि इस दुनियाँ में हम दोनों एक दूसरे के लिए जन्मे हैं। हमने एक दूसरे की आत्मा देखी। आँसू और मुस्कान का संगम देखा। परस्पर मिलकर खुशी का और अलग होकर दर्द का अनुभव किया। इस प्रकार आनंद के, मस्ती के कई दिन बीत गये। हम ने विवाह के बारे में बात की। कल्पना के अनेक सुवर्णमहल बनवाये। उस कल्पना लोक में विचरण करने वाले हमको सत्य का, कठोर सत्य का भी सामना करना पडा।

परीक्षा का रिज़ल्ट आया। हम दोनों के नंबर नहीं थे। किन्तु लोगों की जीभ में हमारे नाम सदा रहते थे। क्यों कि हमारा प्रेम सब को मालूम हो गया था। पिताजी ने मुझे खूब पीटा। पढाई बन्द की गयी। मैं ने साफ साफ बता दिया कि उस के सिवा मैं अपूर्ण हूँ। उसे भूल नहीं सकता। मेरा मन मेरे पास नहीं है। उसे भूलने के पहले मेरी स्मरणाओं को और मन को नष्ट करना पडेगा। आखिर अपने घर में मैं पराया बन गया। जो दुनिया मेरे लिए स्वर्ग जैसा लगता था। वह आज नरक मालूम होने लगा। मेरी प्यारी को एक बार देखना भी मुश्किल हो गया। क्यों कि उसके घरवालों को भी सब कुछ मालूम हो गया था। उस के पिताजी ने एक रात को गुण्डों से मुझे पिटवाया। इस पर भी मुझे ज्यादा दुख नहीं हुआ। मैं सोचता था कि अंतिम विजय मेरी होगी।

इस बीच एक दिन सुना कि उस के पिताजी ने एक अच्छे वर को खरीद लिया है और जल्दी उसकी शादी होने वाली है। मेरा सब नियन्त्रण छूटने लगा। दुनिया में मैं अकेला था। एक दिन उसका वह अंतिम पत्र मिला। उसे पढकर मेरा होश उड गया। ऐसा लगा कि पैरों के नीचे से मिट्टी फिसल रही है। मेरे सारे सपने मिट्टी में मिल गये। मन डाँवाडोल होने लगा। पत्र में लिखा था—"प्रिय, मुझे भूल जाना। मेरी शादी किसी के साथ थे लोग करा रहे हैं। मेरा यह मन आखिरी साँस तक आपके पास रहेगा। इस शरीर को भूल जाइए"।

फिर मुझे क्या हो गया, यह ठीक तरह से मालूम नहीं। लोग कहते हैं कि मैं पागल हूँ। लेकिन, मैं ने क्या किया? मुहब्बत करना इतना बडा पाप है? अब मैं अपने मनोमंदिर में किसी दूसरी को आने नहीं दे सकता। जिस प्रकार कपडा बदलते हैं उसी प्रकार मुहब्बत भी करते जाना यह मुझसे नहीं हो सकता। मेरा यह मन शान्त हो जाए, यही ईश्वर से प्रार्थना है।